■ कहानी

# यंत्रणागृह

○ अर्न्स्ट टोलर

स्टटगार्ट का खुफिया पुलिस के अफसर ने उस मरते हुए नौजवान से पूछा—क्या तुम्हारी ऐसी कोई इच्छा है जिसे तुम इस आखिरी वक्त पूरी करना चाहो?

नौजवान सूनी आंखों से उन बन्द खिड़कियों को एकटक देखता रहा जो आसमान को नीले चौकोर टुकड़ों में काट देती थीं। आंगन में शाहबलूत का पेड़ अपने कंटीले फलों से लदा खड़ा था। उसने अपने से कहा—देखो वहां कैसे मीठे शाहबलूत लगे हैं, वो तुम्हारे खाने के लिए हैं; और जब वो पक चुकते हैं तो मुंह में आप आ गिरते हैं। मैं उन्हें भरपेट खा सकता था—मैंने अपने को क्यों पकड़ा जाने दिया?

'कुछ समझे मैं तुमसे क्या कह रहा हूं?' अफसर ने दोहराया, 'क्या तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा है?'

नौजवान ने अपने से कहा–हां एक चीज है जो मैं चाहता था, या दूसरी तरह कहो तो नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि फिर से कैद हो जाऊं, मैं नहीं चाहता था कि तुम मुझे मारो, ठोकरें बरसाओ और मेरे मुंह पर थूको। अगर मेरे पास ऐसी कोई इच्छाएं होतीं तो क्या मैं खिड़की में से कूद गया होता? मैं समझता हूं तुम्हारा यह ख्याल है कि मैंने यह सब महज मजाक के लिए किया है। है न?

'शायद तुम अपनी मां को देखना चाहो, मौत के पहले?'

मौत, हां, यही तो कहते हैं उस काली चीज को। मगर वह अगर उसका नाम न लेता तो उसका कुछ बिगड़ जाता? मुझे अब यह बतलाने की जरूरत नहीं कि मुझे मरना है : और उस चीज का नाम मेरे मुंह पर लेना बहुत बेहूदा बात है।... मगर वह मरेगा नहीं, वह तो घर जायेगा।

'हां मैं अपनी मां को देखना चाहूंगा।' कितना अच्छा आदमी है कि उसे इस बात का ख्याल है; उसकी नीयत यही है शायद...

उसने भावशून्य आंखों से अफसर को देखा और सिर हिलाकर अपनी मौन स्वीकृति दी।

'मैंने उन्हें बुलाने के लिए आदमी दौड़ा दिया है, थोड़ी देर में आ जाएंगी वह।... अरे हां एक सवाल है जिसका अब तक हमें कोई जवाब नहीं मिला : वह कौन था जिसने तुम्हें वे पत्र दिये?'

अफसर ने इन्तजार किया।

बहुत खूब, नौजवान ने सोचा। उस सवाल से उसके मुंह का स्वाद न जाने कैसा हो गया। उसे भयानक ऊब और खीझ मालूम हुई।

एक बार उन्होंने उसके मुंह में इसलिए कपड़ा ठूंस दिया था कि वह चिल्ला न सके और आज वे चाहते हैं कि वह चिल्लाये और अपने उन साथियों का नाम उगल दे जिनके पीछे वे हफ्तों से कुत्तों की तरह लगे थे। कितनी घिनौनी बात है यह, कितनी घिनौनी।

'मैं आपको कुछ नहीं बतला सकता।'

'अपनी मां का ख्याल करो।'

नौजवान ने छत की ओर देखा।

वह और चार घण्टे जिन्दा रहा। चार घण्टे में तो बहुत से सवाल किये जा सकते हैं। अगर तीन मिनट में एक पूछा जाये तो भी हुए अस्सी। अफसर अफसरी में कुशल था, अपना काम समझता था, इसके पहले वह बहुतों से सवाल कर चुका था, मरते हुए लोगों से भी। तुम्हें जानना चाहिए काम करने का ढंग, और बस। किसी से गला फाड़कर चिल्लाओ, किसी से धीमे कान में बात करो, कुछ को धमकी दो, कुछ को सब्जबाग दिखलाओ।

अफसर ने कहा—'यह तुम्हारे भले के लिए है।'

लेकिन नौजवान ने फिर कोई सवाल न सुना, न धीमे न जोर से। वह शान्ति के साथ इस दुनिया से विदा ले चुका था।

दूसरे दिन अखबार में यह विज्ञप्ति छपी:

'जैसे ही खुफिया पुलिस के अफसर स्टटगार्ट के एक मजदूर को इस अभियोग में पकड़ने वाले थे कि वह मजदूरों को भड़काने वाले पर्चे बांटता था, वैसे ही वह अपने मकान की तीसरी मंजिल की खिड़की से नीचे आ रहा। उसे आंगन में पड़ा पाया गया। उसकी रीढ़ की हड्डी चूर-चूर हो गयी थी।

'कुछ दिन बाद वह जनरल अस्पताल की हवालाती कोठरी में मर गया।'

**(अर्न्स्ट टोलर : हिटलर काल के जर्मन लेखक)**


## आह्वान यहां से प्राप्त करें

**उत्तर प्रदेश**

■ जनचेतना, जाफरा बाजार, **गोरखपुर** ■ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, **गोरखपुर** ■ विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, **गोरखपुर** ■ जनचेतना स्टाल, कॉफी हाउस के पास, हजरतगंज, **लखनऊ** (शाम 5 से 8.30 तक) ■ ओमप्रकाश, 69, बाबा का पुरवा (पुराना), पेपरमिल रोड, निशातगंज, **लखनऊ** ■ राहुल फाउण्डेशन, 3/274 विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, **लखनऊ** ■ विमल कुमार, बुक स्टाल, नीलगिरि काम्प्लेक्स के सामने, इंदिरानगर, **लखनऊ** ■ कृष्णगोविन्द सिंह, बी-18, बिड़ला छात्रावास, बी.एच.यू., **वाराणसी** ■ प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर, विश्वनाथ मन्दिर गेट, बी.एच.यू. परिसर, **वाराणसी** ■ शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ ■ रविन्द्र कुमार, भारतीय जीवन बीमा निगम, **पन्तनगर (ऊधमसिंहनगर)** ■ रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, **रुद्रपुर (ऊधमसिंहनगर)** ■ प्रो. प्यारेलाल, 139, फूलबाग कालोनी, **पन्तनगर** ■ राजेन्द्र प्रसाद, रेनु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, **सोनभद्र** ■ डी. के. सचान, कृषि विज्ञान केन्द्र, 243, विकास भवन, न्यू कलक्ट्रेट, **गाजियाबाद**

**दिल्ली**

■ सत्यम वर्मा, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार-फेज एक, दिल्ली-91 ■ अभिनव सिन्हा, बी.ए.ऑनर्स-II (इतिहास), रामजस कालेज, दिल्ली वि.वि. ■ गीता बुक सेंटर, जे.एन.यू. ■ बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, मंडी हाउस ■ पत्रिका मंडप, दिल्ली विश्वविद्यालय

**हरियाणा**

■ नरभिंडर सिंह, शहीद भगतसिंह विचार मंच, हरियाणा, ग्रा./पो.संतनगर, जिला **सिरसा**

**बिहार**

■ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, **पटना** ■ समकालीन प्रकाशन (प्रा. लि.), पुस्तक बिक्री केन्द्र, आजाद मार्केट, पीरमुहानी, **पटना**

**बंगाल**

■ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, **कलकत्ता** ■ जनार्दन थापा, लुकसान बाजार, पो. करेन, जि. **जलपाईगुड़ी** ■ सी.पी. सरोज, सनराइज स्कूल, छोटा अदलपुर, सेमलबाड़ी, **दार्जीलिंग** ■ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधाननगर, **सिलीगुड़ी**

**मध्य प्रदेश** ■ चिंचोलकर बुक हाउस बस स्टैण्ड, जगदलपुर, बस्तर ■ विकल्प सांस्कृतिक मोर्चा, 22 स्वास्तिक काम्प्लेक्स, रसेल चौक, जबलपुर

**महाराष्ट्र** ■ पीपुल्स बुक हाउस, 15, कावसजी पटेल स्ट्रीट, फोर्ट, **मुम्बई**

**राजस्थान** ■ सुभाष शर्मा, 221, उत्तरी सुन्दरवास, गंगा फ्लोर मिल, **उदयपुर**

**असम** ■ शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, **तिनसुकिया**

**नेपाल** ■ विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवण पथ, बुटवल, **रुपनदेई**